काव्य-शास्त्र

"छंद"

हिन्दी साहित्य

कक्षा - 11 व 12.

1. छंद का सामान्य परिचय
2. गीतिका छंद (कक्षा-12)
3. हरिगीतिका छंद (कक्षा-12)
4. छप्पय छंद (कक्षा-12)
5. कुण्डलिया छंद (कक्षा-12)
6. दोहा छंद (कक्षा-11)
7. सोरठा छंद (कक्षा-11)
8. रोला छंद (कक्षा-11)
9. द्रुतविलम्बित छंद (कक्षा-12)
10. वंशस्थ छंद (कक्षा-12)
11. कवित्त छंद (कक्षा-12)
12. सवैया छंद (कक्षा-12)
13. चौपाई छंद - (कक्षा-11)
14. मन्दाक्रांता छंद - (कक्षा-11)
15. शिखरिणी छंद - (कक्षा-11)
16. वसन्ततिलका छंद - (कक्षा-11)
17. मालिनी छंद - (कक्षा-11)

By Challa Sir

"छन्द"

- छंद का सर्वप्रथम उल्लेख वैदिक साहित्य में वेदांगों (वेद के छह अंगों) मे से एक छंद है जिसे वेद के पैर पाद अंग के रूप मे स्वीकार किया है।

- छन्द शब्द संस्कृत की छद् धातु में असुन् प्रत्यय लगने से बना है, जिसका अर्थ है - प्रसन्न करना, फुसलाना, बाँधना।

- छन्द की परिभाषा -

जिसमें मात्राओं की संख्या, वर्णों की संख्या, गणक्रम तथा यति, गति के द्वारा किसी रचना को क्रमबद्ध किया जाता है, वह छन्द कहलाता है।

- वेद के अंग -

(1) शिक्षा (घ्राण) (नाक)
(2) कल्प (हाथ)
(3) निरुक्त (श्रोत्र) (कान)
(4) व्याकरण (मुख, मुँह)
(5) ज्योतिष (नेत्र, आँख)
(6) छन्द (पैर / पाद) - ऋग्वेद के पुरुष सुक्त के नवम मंत्र में छंद का उल्लेख है।

- आचार्य पिंगल - छन्दशास्त्र के प्रवर्तक माने जाते है। इनके द्वारा रचित 'छंद:सूत्र' रचना छंदशास्त्र की सर्वप्रथम रचना मानी जाती है।

By Chalia Sir

- छंद के अंग -

(1) चरण / पद / पाद (2) वर्ण (3) मात्रा (4) दल
(5) संख्या (6) क्रम (7) गण (8) गति / लय
(9) यति / विराम (10) तुक

- छंद से सम्बंधित शब्दावली :-

(1) यति :-

यति का अर्थ ठहरना. इसे छंद की आत्मा / प्राण कहा जाता है।

प्रत्येक छंद में बीच में कुछ पदों पर विराम करना पड़ता है, इस विराम स्थल को यति कहते है।

(2) गति :-

छन्द को पढ़ते समय स्वर में होने वाले उतार-चढ़ाव को गति कहते है।

(3) पाद / चरण :-

प्रत्येक ~~छंद~~ छन्द का चतुर्थ ~~चरण~~ भाग चरण कहलाता है. एक छंद में प्राय: चार चरण होते है।

(4) दल :-

किसी छन्द को लिखते समय जब एक ही पंक्ति में एक से अधिक चरण लिख दिए जाते है तो उस पूरी पंक्ति को दल कहा जाता हैं।

By Chalia Sir

(5) मात्रा :-

किसी भी स्वर के निश्चित उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है।

- मात्रा दो प्रकार की होती है।

(i) लघु / ह्रस्व :- अ, इ, उ, ऋ ये लघु स्वर है, इसके उच्चारण की मात्रा एक गिनी जाती है तथा (।) चिह्न से दर्शाया जाता है।

(ii) गुरू / दीर्घ :-

जिस मात्रा के उच्चारण में अधिक समय लगता है उसे दीर्घ कहा जाता है।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, कं, खं आदि।

दीर्घमात्रा को (ऽ) चिह्न से दर्शाते है।

⇒ गण परिचय :-

तीन वर्णों के समूह को गण कहते है। जैसे 'भारत' शब्द में तीन वर्ण होने से यह एक गण है, किन्तु 'भारतीय' शब्द में चार वर्ण है अतः 'भारती' तक तीन वर्णों का एक गण माना जाता है। गण निर्धारण में तीन ही वर्ण होते है, अर्थात् हलन्त वर्णों को इनमें नहीं गिना जाता है।

By Chalia Sir

- वर्णों की लघुता और गुरूता के विचार से गणों के आठ रूप होते हैं। सभी गणों के नाम तथा रूप निम्न सूत्र से सरलता से याद रखे जा सकते है।

सूत्र - "यमाताराजभानसलगा"

गणनाम	सूत्राक्षर	मात्राएँ	उदाहरण	शुभाशुभ
यगण	यमाता	।ऽऽ	विमाता	शुभ
मगण	मातारा	ऽऽऽ	पांचाली	शुभ
तगण	ताराज	ऽऽ।	प्रासाद	अशुभ
रगण	राजभा	ऽ।ऽ	वासना	अशुभ
जगण	जभान	।ऽ।	विनाश	अशुभ
भगण	भानस	ऽ।।	याचक	शुभ
नगण	नसल	।।।	सरस	शुभ
सगण	सलगा	।।ऽ	लघुता	अशुभ

सूत्र के अन्त में 'ल' वर्ण से लघु तथा 'गा' से गुरु वर्ण का संकेत किया गया है। इन गणों का प्रयोग वार्णिक छन्दों में ही किया गया है।

⇒ छंद के भेद - (दो भेद)

(1) मात्रिक छंद (2) वार्णिक छंद

By Chalia Sir

(1) मात्रिक छंद -

जिन छन्दों के पाद / चरण मात्राओं की संख्या पर निर्भर रहते है, वे मात्रिक छंद कहलाते है।

जैसे - दोहा, चौपाई, सोरठा आदि।

- मात्रिक छन्द के तीन भेद होते है।

(1) अर्द्धसम मात्रिक छन्द :-

जिस छंद में (पहले एवं तीसरे) एवं (दूसरे व चौथे) (1,3 - 2,4) चरणों की मात्रा बराबर हो -

जैसे - दोहा, सोरठा, उल्लाला

(2) समचरण मात्रिक छंद :-

छंद के चारों चरणों की मात्राएं बराबर होती है।

जैसे - चोपई, चौपाई, गीतिका, हरिगीतिका

(3) विषम चरण मात्रिक छंद :-

जिस छंद में चार से अधिक छह या आठ चरण होते है, उनमें मात्राओं की संख्या भिन्न-भिन्न हो।

जैसे :- कुण्डलिया, छप्पय

By Chalia Sir

2. वार्णिक छन्द :-

जिन छन्दों के पाद अथवा चरण वर्णों की संख्या पर निर्भर करते है. वह वार्णिक छंद है।

जैसे :- इन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, वंसततिलका, कवित्त, मंदाक्रांता आदि।

⇒ मात्रा निर्धारण के नियम :-

1. मात्रा सदैव स्वर वर्णों पर ही प्रयुक्त होती है। व्यंजन वर्ण पर कभी भी मात्रा का प्रयोग नहीं किया जाता है।

2. ह्रस्व स्वरों (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के साथ सदैव लघु मात्रा एवं दीर्घ स्वरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ) के साथ सदैव गुरु मात्रा प्रयुक्त होती है।

3. यदि ह्रस्व स्वर के तुरन्त बाद कोई संयुक्ताक्षर / आधा अक्षर / हलन्त वर्ण / विसर्ग लिखा हुआ हो तो ह्रस्व होने पर भी उसके साथ गुरु मात्रा प्रयुक्त होती है।

4. यदि ह्रस्व स्वर के साथ अनुस्वार का प्रयोग हो रहा हो उसे गुरु ~~मात्रिक~~ मात्रिक माना जाता है एवं ह्रस्व स्वर के साथ अनुनासिक स्वर (चन्द्र बिन्दु) का प्रयोग हो रहा हो तो उसे लघु मात्रिक ही माना जाता है।

5. दीर्घ स्वरों के साथ अनुस्वार / अनुनासिक दोनों ही स्थितियों में गुरु मात्रा प्रयुक्त होती है।

By Chalia Sir

6. प्रत्येक चरण के अन्तिम वर्ण को छंद की आवश्यकतानुसार विकल्प से लघु / गुरु माना जा सकता है। संस्कृत साहित्य में चरण के अन्तिम वर्ण को प्रायः गुरु ही माना जाता है, परन्तु हिन्दी में ऐसा नहीं होता है।

~~प्रमु~~

By Chalia Sir

प्रमुख छन्द

1. गीतिका छंद :-

कक्षा -12 हि॰ सा॰

- मात्रिक सम छंद है।
- इसमें 26 मात्राएँ होती है।
- 15 और 12 पर यति तथा अंत में लघु -गुरु आवश्यक है।
- तुक प्रथम द्वितीय तथा तीसरे एवं चौथे चरण में मिलती है।

उदा॰- S I S S S S S S S I S I I S I S = 14+12 = 26 मात्राएँ

साधु भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे।

सभ्यता की सीढ़ियों पर, सूरमा चढ़ने लगे॥

S I S I I S I S S S I S I I S I S = 14+12 = 26 मात्राएँ

- धर्म के मग में अधर्मी, से कभी डरना नहीं।

चेत कर चलना कुमारग, में कदम धरना नहीं॥

2. हरिगीतिका :-

हि० सा० कक्षा 12

- चार चरणों वाला एक सम मात्रिक छंद है।
- इसके प्रत्येक चरण में 16 व 12 के विराम में 28 मात्राएँ होती है।
- अंत: में लघु व गुरु (I.S.) आना अनिवार्य है।

उदा० - हरिगीतिका हरिगीतिका हरि, गीतिका हरिगीतिका — 16+12=28 मात्राएँ

(II S I S II S I S II S I S II S I S)

- जो चाहता संसार में कुछ, मान औ' सम्मान है, — 16+12=28 मात्राएँ

(S S I S S S I S I I S I S S S I S)

उसके लिए उस मंत्र में बढ़, कर न और विधान है।
जिसको न निज गौरव तथा निज, देश का अभिमान है,
वह नर नहीं नर-पशु निरा है, और मृतक समान है।।

3. छप्पय छन्द :-

कक्षा 12 हि. सा.

- यह विषम मात्रिक छंद होता है।
- यह छंद रोला व उल्लाला छंदों को मिलाकर बनाया जाता है।
- इसमें कुल छह चरण होते है।
- इसके प्रथम चार चरणों में रोला छंद के लक्षण व अन्तिम दो चरणों में उल्लाला छंद के लक्षण पाये जाते है।

By Chalia Sir

- इस छंद को <u>गाथा छंद</u> भी कहा जाता है।

- रोला (11,13 मात्राएँ + उल्लाला 15,13 मात्राएँ)

S S I I I I S I I I I I I I I S I I S = 24 मात्राएँ

उदा० - नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।

सूर्यचन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकार है।

नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारामण्डल है।

बन्दीजन खग वृन्द, ~~शेष~~ शेषफन सिंहासन है। - रोला छन्द

I I S I I S I I S I S I I S S I I S I S

करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस देश की। = 28 मात्राएँ

हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥ - उल्लाला छंद

I I S I I S S I S I I I I S I S S

- जिसकी रज में लोट, लोट कर बड़े हुए हैं। = 24 मात्राएँ

घुटनों के बल सरक, सरक कर खड़े हुए हैं॥

परम हंस सम बाल्य, काल सब सुख पाए।

जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए॥ - रोला छंद

I I S I I S S S I I I I I S S S S I S

हम खेल कूदे हर्ष युत, जिसकी प्यारी गोद में।

हे मातृभूमि तुझको निरखि, मगन क्यों न हो मोद में॥ - उल्लाला छंद

S S I S I I I S I I I I I I S I S S I S

4. कुण्डलिया छन्द :-

कक्षा-12
हि. सा.

- यह विषम मात्रिक छंद है।
- इसमें छह चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है।
- दोहा व रोला के योग से कुण्डलिया बनती है। पहले दोहे का अन्तिम चरण ही रोले का प्रथम होता है। तथा जिस चरण से कुण्डलिया का आरम्भ होता है, उसी शब्द से कुण्डलिया समाप्त होता है।
- कुण्डलिया छंद = दोहा + रोला

दोहा में 13-11 मात्राएँ
रोला में 11-13 मात्राएँ } → कुण्डलिया

- प्रारम्भ के दो पदों का एक दोहा और फिर चार पदों का रोला जोड़कर कुण्डलिया छंद की रचना होती है।

उदा० - बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय।
जो बनि आवे सहज में, ताही में चित देय। } - दोहा - 13+11=24 मात्राएँ

ताही में चित देय, बात जो ही बनि जावे।
दुरजन हंसें न कोय, चित्त में खेद न पाये।
कह गिरधर कविराय, यहै कर मन पर तीती।
आगे की सुधि लेय, समुझि बीती सो कीती ॥ } - अन्तिम चार चरण 11+13=24 मात्राएँ रोला छंद

YouTube- Chalia Smart Study

By Chalia Sir

अन्य उदाहरण :-

।ऽ ।ऽऽ ऽ।ऽ ऽ ऽऽ ।।ऽ।
बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारे ~~आपको~~ आपनो, जग में होत हंसाय ॥
] ~~सोरठा~~ दोहा छंद 13+11 = 24 मात्राएँ

।। ऽ ऽ। ऽ।
जग में होत हंसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान-पान-सम्मान राग रंग मनहि न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय, दुःख कुछ टरत न टारै ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारै ॥
।।।।। ऽ ।। ऽ। ।ऽ ऽ ।ऽ ।ऽऽ
] ~~सोरठा~~ रोला छंद 11+13 = 24 मात्राएँ

5. दोहा छंद :-

कक्षा 11 (हिन्दी साहित्य)

- यह ~~एक~~ अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
- इसमें विषम (पहले व तीसरे) चरणों में 13-13 मात्राएँ तथा सम (दूसरे व चौथे) चरणों में 11-11 मात्राएँ होती है।
- कुल 48 मात्राएँ होती है।
- विषम चरणों के ~~शुरू में~~ आरम्भ में जगण आना वर्जित है।
- तुक सम चरणों में मिलती है।
- सम चरणों के अन्त में एक गुरु और एक लघु मात्रा हो।

।।।। ऽऽ ऽ। ऽ ।। ऽऽ ।।ऽ।
उदा०- रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय ।
ऽऽ ऽ ।। ऽ ।ऽ ।ऽ ऽ। ।। ऽ।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय ॥
] दोहा छंद 13+11 = 24 मात्राएँ

ऽऽ ।।ऽ ऽ। ऽ ।।। ।ऽ।। ऽ।
- हंसा बगुला एक से, रहत सरोवर माँहि ।
।।ऽ ऽऽ ऽ।ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ।
बगुला ढूँढे माछरी, हंसा मोती खाँहि ॥
] दोहा छंद 13-11 = 24 मात्राएँ

youtube - Chalia Smart Study

By Chalia Sir

6. सोरठा छंद :-

कक्षा-11 हिन्दी साहित्य

- यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
- यह दोहा के विपरीत लक्षणों वाला छंद है।
- इसके विषम चरणों में 11-11 मात्राएँ तथा सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती है।
- इसके सम चरणों के प्रारम्भ में जगण आना वर्जित माना जाता है जबकि विषम चरणों के अन्त में एक लघु वर्ण आना आवश्यक है।
- तुक प्राय सम चरणों में मिलती है।

उदा० -

II SII S SI SI ISS IIIS
सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
IIS IIS SI III SIS III II
विहँसे करुणा ऐन, लखन जानकी सहित प्रभु ॥

– सोरठा छंद 11-13 = 24 मात्राएँ

7. रोला छंद :-

कक्षा-11 हि.सा.

- रोला मात्रिक सम छंद होता है।
- इसके प्रत्येक चरण में 11 और 13 मात्राओं के विराम से कुल 24 मात्राएँ होती है।
- इसमें तुक प्रायः दो-दो चरणों में मिलती है।

उदा० -

है देवी! यह नियम, सृष्टि में सदा अटल है;
S S S II III SI S IS III S
रह सकता है वही, सुरक्षित जिसमें बल है।
II IIS S IS ISII IIS II S
निर्बल का है नहीं, जगत में कहीं ठिकाना,
SII S S IS III S IS ISS
रक्षा साधन उसे, प्राप्त हों चाहे नाना ॥
SS SII IS SI S SS SS

रोला छन्द 11+13=24 मात्राएं

⇒ वार्णिक छंद :-

(1) द्रुतविलम्बित छंद :-

कक्षा-12 हि.सा.

- यह वार्णिक सम छंद होता है।
- इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते है, जो क्रमशः नगण, भगण, भगण, रगण के रूप में लिखे जाते है।
- लक्षण - नभ भरो
- प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते है। इस कारण यह छंद 'जगति जाति' का छंद माना जाता है।
- इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
- तुक प्रायः सम चरणों में मिलती है।

नगण भगण भगण रगण
।।। S।। S।। S।S

उदा०- दिवस का अवसान समीप था, = द्रुतविलम्बित छंद

।।। S ।। S।। S ।S
गगन था कुछ लोहित हो चला — नगण, भगण, भगण, रगण

।। । S ।। S ।। S।S
तरु शिखा पर थी अब राजती, — 12 वर्ण

।।।S ।। S।। S ।S
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा।

(2) वंशस्थ छंद :-

कक्षा-12 हि.सा.

- लक्षण- वंशस्थ 'जतजर'

(जगण, तगण, जगण, रगण)
।S। SS। ।S। S।S

- यह 'जगती जाति' का वार्णिक सम छंद होता है।
- इसके प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते है। जो क्रमशः जगण, तगण, जगण व रगण के रूप में लिखे जाते है।

By Chalia Sir

- इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

उदा० -

| S | S S | | S | S | S

दिनान्त था वे दिननाथ डूबते, = वंशस्थ छंद

| S | S S | | S | S | S

सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे — 12 वर्ण (जगण, तगण, जगण, रगण)

| S | S S | | S | S | S

दिगन्त में गो-रज थी समुत्थिता

| S | S S | | S | S | S

विषाण नाना बजते सवेणु थे।

3 कवित्त छंद :- एक वार्णिक छंद है।

कक्षा-12 हि.सा.

- इसमें चार चरण होते हैं।
- प्रत्येक चरण में 16 व 15 के विराम में 31 वर्ण होते है।
  प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु वर्ण होना चाहिए।
- छंद की गति को ठीक रखने के लिए 8, 8, 8 और 7 वर्णों पर यति होती है।
- यह दंडक श्रेणी का वार्णिक सम छंद है।
- मनहरण छंद भी कहते हैं।

उदाहरण :-

पात भरी सहरी सकल सुत बारे-बारे, - 16 वर्ण
केवट की जाति कुछ वेद न पढ़ाइहों। - 15 वर्ण
मेरो परिवार सब याहि लागि राजाजु हौं,
दीन वित्त-हीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं॥

अन्य उदा० - सहज विलास हास, पिय की हुलास तजि, - 16 वर्ण
दुख के निवास प्रेम, पास पारियत हैं। - 15 वर्ण

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के - 16 वर्ण
सुमन झिंगुला सोहै तन छबि भारी है। - 15 वर्ण
पवन झुलावै केकी कीर बतरावै देव
कोकिल हलावै हुलसावै कर तारी है।

By Chalia Sir

⇒ सवैया छंद :-

कक्षा-12 हि.सा.

- यह वार्णिक सम छंद होता है।
- इसके प्रत्येक चरण में 22 से लेकर 26 वर्ण होते हैं।
- वर्णों की संख्या एवं गणों की प्रकृति के आधार पर इस छंद के ग्यारह (11) भेद किये जाते हैं।

ट्रीक :- मदिरा मालती सुमुखी, चकोर दुर्मिल किरीट।
अरसात अरविन्द सुन्दरी, ~~लव~~लवगलता कुंदल (सुख) ॥

1. भस्म लगावत शंकर के अहि लोचन मानि परी झरिकै - 22 वर्ण

S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S
भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण गुरु

7 भगण + 1 गुरु = मदिरा सवैया (22 वर्ण)

2. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं। - 23 वर्ण

S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S S
भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण गुरु

7 भगण + 2 गुरु = मालती सवैया = 23 वर्ण

3. हिये वनमाल रसाल धरे सिर मोर किरीट महा लसिबो - 23 वर्ण

I S I | I S I | I S I | I S I | I S I | I S I | I S I | I S
जगण जगण जगण जगण जगण जगण जगण लघु, गुरु

7 जगण + 1 लघु + 1 गुरु = सुमुखी सवैया = 23 वर्ण

4. धन्य वही नर नारि सराहत या छबि काटत जो भव फंद - 23 वर्ण

S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I I | S I
भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण गुरु, लघु

7 भगण + 1 गुरु + 1 लघु = ~~म~~ चकोर सवैया - 23 वर्ण

By Chalia Sir

5. सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी – २५ वर्ण
II SI IS II S IIS IIS IIS II SI IS
सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण

8 सगण = दुर्मिल सवैया – २५ वर्ण

6. मानुष हो तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव कि ग्वारिन – २५ वर्ण
SII S I I S II SI I S II SII SI I SII
भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण

8 भगण – किरीट सवैया – २५ वर्ण

7. सो कर मांगन को बलि पै करतारहु ने करतार पसारियो – २५ वर्ण
S II SII S II S II SII S II SI I SIS
भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण रगण

7 भगण + 1 रगण = अरसात सवैया = २५ वर्ण

8. नित राम पदै अरविंदन को मकरंद पियो सुमिलिंद समान = २५ वर्ण
II SI IS IIS II S IIS IIS IIS IIS I
सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण + लघु

8 सगण + 1 लघु = अरविंद सवैया = २५ वर्ण

9. सुख शांति रहे सब ओर सदा अविवेक तथा अघ पास न आवे = २५ वर्ण
II SI IS II SI IS IISI IS II SI I SS
सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण + 1 गुरु

8 सगण + 1 गुरु = सुन्दरी सवैया = २५ वर्ण

By Chalia Sir

10. भजौं रघुनंदन पाप निकंदन श्री जग बंदन नित्य हिये धर – २५ वर्ण

| S | | | S | | | S | | | S | | | S | | | S | | | S | | | S | |

जगण जगण जगण जगण जगण जगण जगण जगण + । लघु

8 जगण + एक लघु = लवंगलता सवैया - २५ वर्ण

11. यहि भाँति हरी जसुदा उपदेसहि भाषत नेह लहैं सुख सो धन - 26 वर्ण

| | S | | S | | S | | S | | S | | S | | S | | S | |

सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण लघु

8 सगण + २ लघु = कुंदलता या सुख सवैया = 26 वर्ण

By Chalia Sir

⇒ चौपाई :-

कक्षा-11 हि.सा.

- चौपाई छंद एक 'मात्रिक छंद' छंद होता है।
- इसमें चार चरण होते हैं।
- इसके प्रत्येक चरण में कुल 16 मात्राएँ होती हैं।
- इसके चरण के अन्त में ~~गुरु~~ जगण और तगण का आना वर्जित होता है।
- तुक प्रथम चरण की द्वितीय चरण से तथा तृतीय चरण की चतुर्थ चरण से मिलती है।
- प्रत्येक चरण के अन्त में यति होती है।
- चरण के अन्त में गुरु स्वर या लघु स्वर नहीं होते हैं। लेकिन दो गुरु स्वर और दो लघु स्वर हो सकते हैं।

उदा० - (1) ~~इस~~ इहि विधि राम सबहिं समुझावा।
गुरु पद पदुम हरषि सिरनावा ॥ — 16 मात्राएँ

(2) बंदउ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अमिय मूरियन चूरन चारु। समन सकल भव रुज परिवारु ॥
— 16 मात्राएँ

⇒ मन्दाक्रान्ता :-

कक्षा-11 हि.सा.

- इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं।
- एक भगण, एक नगण, दो तगण और दो गुरु स्वर होते हैं।
- 5 वें, 6 वें तथा 7 वें वर्ण पर विराम होता है।

उदा० - कोई क्लांता पथिक ललना चेतना शून्य होके,
तेरे जैसे पवन में, सर्वथा शान्ति पावे।
तो तू हो के सदय मन, जा उसे शान्ति देना,
ले के गोदी सलिल उसका, प्रेम से तू सुखाना ॥

(नोट :- अन्त में दो गुरु होंगे)

By Chalia Sir

⇒ शिखरिणी छंद -

कक्षा -11
हि.सा.

- शिखरिणी एक वर्णिक छंद है।
- इसमें 17 वर्ण होते हैं।
- इसके हर चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु स्वर और गुरु स्वर होता है।
- इसके प्रत्येक चरण में यति छह और ग्यारह वर्णों पर होती है।

उदा० - 1 छटा कैसी प्यारी, प्रकृति तिय के चन्द्रमुख की, -17 वर्ण
नया नीला ओढ़े वसन चटकीला गगन का।
परी सलमा रुपी, जिस पर सितारे सब जड़े,
गले में स्वर्गंगा, अति ललित माला सम पड़ी।

नोट:- मंदाक्रांता छंद में अन्तिम में दो गुरु स्वर होते है, परन्तु शिखरिणी छंद में अन्त में 1 लघु तथा 1 गुरु स्वर होता है।

⇒ वसन्ततिलका छंद -

कक्षा -11
हि.सा.

- यह सम वर्ण छंद है।
- यह चौदह वर्णों वाला छंद है।
- तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरुओं के क्रम से इसका प्रत्येक चरण बनता है।

तगण (S S I) भगण (S I I) जगण (I S I) जगण (I S I) गुरु (S S)

उदा० - गीता व मानस करे, दृढ़ राह सारी। - 14 वर्ण
सत्संग प्राप्ति हर ले, भव ताप भारी॥
सिद्धान्त विश्व हित के, मन में सजाऊँ।
हिंसा प्रवृत्ति रख के, न स्वयं लजाऊँ॥

By Chalia Sir

⇒ मालिनी छंद :-

कक्षा-11
हि.सा.

- यह वार्णिक सम छंद है।
- इसमें 15 वर्ण होते हैं।
- दो नगण, एक मगण, दो यगण होते हैं।
- चरण के अन्त में यति होती है।

उदा० - प्रमुदित मथुरा के मानवों को बना के, — 15 वर्ण
सकुशल रह कै औ विघ्न बाधा बचाके।
निज प्रिय सुत दोनों साथ ले के सुखी हो,
जिस दिन पलटेंगे, गेह स्वामी हमारे ॥

। । ।	। । ।	S S S	। S S	। S S
नगण	नगण	मगण	यगण	यगण

- 2 नगण + 1 मगण + 2 यगण — मालिनी छंद

By Chalia Sir

* विगत परीक्षा में पूछे गए प्रश्न *

1. हरिगीतिका छंद की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (2018) (2020)

उत्तर – इसके प्रत्येक चरण मे 28 मात्राएं तथा 16-12 पर यति होती है। प्रत्येक चरण के अन्त में एक लघु व एक गुरु अवश्य आता है।

जो संसार चाहता संसार मे कुछ, मान भी सम्मान है।
उसके लिए उस मंत्र मे बद्ध, करन और विधान है॥

2. छप्पय एवं कुंडलिया छंद की परिभाषा देते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए। (2018)

उत्तर – छप्पय छन्द के प्रथम चार चरणों में 24-24 मात्राएँ व 11-13 पर यति होती है तथा अन्तिम दो चरणों में 28-28 मात्राएँ व 15-13 पर यति होती है। इसके प्रथम चार चरण रोला के अन्तिम दो उल्लाला छन्द के होते है।

– कुंडलिया – के सभी ~~चरण~~ छः चरणों मे 24-24 मात्राएं होती है तथा प्रथम दो पद दोहा व अन्तिम चार चरण रोला के होते है।

3. गीतिका छंद की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (2019)

उत्तर – जिस छंद के प्रत्येक चरण में 14-12 मात्राओं पर यति तथा 26 मात्राएँ होती है। अन्त में एक लघु व एक गुरु वर्ण रहता है।

साधु भक्तों मे सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे, सभ्यता की सीढ़ियों पर, सूरमा चढ़ने लगे
वेद मंत्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे, वंचकों की छातियों मे, शूल से गड़ने लगें।

4. द्रुतविलम्बित छंद' की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए। (2020)

उत्तर – यह वर्णिक चार चरणों ~~वाला~~ का छंद है। इसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से कुल 12-12 वर्ण होते है। द्रुतविलम्बित होय न-भा-भ-रा।"

5. दोहा और रोला छन्दों के मेल से बनने वाला छन्द है। (2021)

उत्तर – कुण्डलियाँ छंद

6. रोला और उल्लाला के मिलने से बनने वाला छंद है। (2021)

उत्तर – छप्पय छंद

7. गीतिका छंद के प्रत्येक चरण में ...... मात्राएं होती हैं। (2022)

उत्तर – 16 मात्राएं

8. मात्रिक छन्दों में ...... की संख्या नियत रहती हैं। (2023)

उत्तर – पाद/चरण मात्राओं

9. 'वसन्ततिलका' छंद के प्रत्येक चरण में ..... वर्ण होते हैं। (2023)

उत्तर – चौदह वर्णों वाला छन्द

By Chalia Sir

"रस प्रकरण"

:- काव्य (कविता, नाटक आदि) के पढ़ने, सुनने अथवा देखने से जो आनन्द प्राप्त होता है, वही रस कहा जाता है।

- रस को साहित्य के आचार्यों ने काव्य की आत्मा माना है।
- रस के बिना काव्य भी प्रभावहीन और निर्जीव होता है।
- आचार्य भरतमुनि को रस शास्त्र का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है।
- इनके द्वारा रचित नाट्यशास्त्र रचना में रस का सूत्र निम्नानुसार प्राप्त होता है।

"विभावानुभाव-व्यभिचारि-संयोगाद्रस निष्पतिः"

अर्थात् विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी (संचारी) भाव के संयोग से रस की निष्पति होती है।

- आचार्य विश्वनाथ ने कहा है कि 'रसात्मकम् वाक्यम् काव्य' अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल - जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।
- रस की संख्या दस मानी जाती है।

"रस के अंग"

- रस के चार अंग - स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

(1) स्थायी भाव :-
- वे भाव एवं मनोविकार जो सहृदय के मन में वासना (ज्ञान, इच्छा) के रूप में सदा विद्यमान रहते हैं।

By Chalia Sir

- स्थायी भावों को ही रस का मूल जड़ कहा जाता है।
- मन के भीतर स्थायी रूप से रहने वाला सुषुप्त (गहरी नींद में सोया हुआ) संस्कार या वासना (ज्ञान, इच्छा) को स्थायी भाव कहते हैं।

रस		स्थायी भाव	रस		स्थायी भाव
1. शृंगार	–	रति	6. भयानक	–	भय
2. हास्य	–	हास	7. वीभत्स	–	जुगुप्सा
3. करुण	–	शोक	8. अद्भुत	–	विस्मय
4. रौद्र	–	क्रोध	9. शांत	–	निर्वेद
5. वीर	–	उत्साह	10. वात्सल्य	–	वत्सलता

नोट:- कुछ विद्वान वात्सल्य नामक दसवाँ स्थायी भाव भी मानते हैं।

:- शांत रस को 9वाँ रस मानने वाले - उद्भट
:- वात्सल्य रस को 10वाँ रस मानने वाले - पं. विश्वनाथ

नोट:- भरतमुनि के अनुसार 8 रस हैं।

(2) विभाव:- स्थायी भाव को जगाने वाले व्यक्ति, वस्तु या परिस्थितियाँ
- विभाव कहे जाते हैं।
- विभाव के दो प्रकार हैं- (1) आलम्बन विभाव
(2) उद्दीपन विभाव

(i) आलम्बन विभाव:- स्थायी भाव जागृत करने वाले कारण (व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति) आलम्बन होते है।
- आलम्बन के दो रूप है - (1) आश्रय (2) विषय
- जिसके मन में स्थायी भाव जागता है वह आश्रय कहा जाता है। और जिस कारण से जागता है, उसे विषय कहते है।

By Chalia Sir

जैसे:- पुष्पवाटिका में सीता को देखकर राम के हृदय में प्रेमभाव जाग्रत हुआ।

'आश्रय- राम' 'विषय- सीता'

(ii) उद्दीपन विभाव:-

-स्थायी भाव को उद्दीपत या तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन विभाव होते है। नायक नायिका का रूप सौन्दर्य, पहों की चेष्टाएँ, वस्तु, उद्यान, चाँदनी, देश-काल आदि उद्दीपन विभाव होते है।

(3) अनुभाव:-

:- आश्रय की चेष्टाएँ अनुभाव कही जाती हैं।

:- भाव का बोध कराने वाले अनुभाव होते हैं।

- भरतमुनि ने अनुभाव के तीन भेद - आंगिक, वाचिक, सात्विक

(5) संचारी भाव:-

:- रस के अनुभव होते समय आश्रय के मन में जो भाव बार-बार उत्पन्न होते और मिटते रहते है, वे संचारी या व्यभिचारी भाव कहे जाते है। इनकी संख्या तैंतीस मानी गयी है।

⇒ विभिन्न रसों के नाम:-

(1) शृंगार रस:-

जहाँ काव्य में 'रति' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर रस में परिणत होता है, वहाँ शृंगार रस होता है।

By Chalia Sir

⇒ शृंगार रस के दो भेद होते हैं- (i) संयोग शृंगार (ii) वियोग शृंगार

(i) संयोग शृंगार :- कंज नयनि मंज्जन् किएँ, बैठी ब्यौरति बार।
कच-उँगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार॥

- यहां राधा और कृष्ण की प्रेम का वर्णन हैं। दोनों साथ है, अतः संयोग शृंगार की योजना है। कमल जैसी नेत्रवाली राधा स्नान करके बाल काढ़ रही है परन्तु बाल और उंगली के बीच से श्रीकृष्ण ~~को~~ के सुन्दर रुपी को देखे जा रही है।

कृष्ण - आलम्बन, राधा - आश्रय
कृष्ण का रुप - उद्दीपन. बालों की वोट से देखना आदि - अनुभव
लज्जा, औत्सुक्य आदि संचारी भाव है।
अतः यहाँ संयोग शृंगार का वर्णन हैं।

(ii) वियोग शृंगार - सुनि-सुनि ऊधव की अकह कहानी कान,
कोऊ घहरानी, कोऊ घानहिं घिरानी हैं।
कोऊ स्याम-स्याम कै बहकि बिललानी,
कोऊ कोमल करेजौ घामि सहमि सुखानी हैं॥

- यहां गोपियों श्रीकृष्ण से वियोग की स्थिति का वर्णन है। श्रीकृष्ण आलम्बन है, गोपियां आश्रय है। ऊधव की अकह कहानी उद्दीपन है। कांपना, श्याम-श्याम पुकारना, व्याकुल होना, हृदय को थाम लेना आदि अनुभाव है,
जड़ता, प्रलाप, उन्माद आदि संचारी भाव है।
इस प्रकार यहां वियोग शृंगार का वर्णन हैं।

By Chalia Sir

(2) हास्य रस :-

जहाँ कवि किसी विचित्र वेशभूषा, चेष्टा तथा कथन का वर्णन करके 'हास' नामक स्थायीभाव को जगाता है और विभाव आदि से पुष्ट कर देता है। वहाँ हास्य रस कहा जाता है।

उदाहरण :- सिर घोट मोटे पर, चुटिया थी लहराती।
थी तोंद लटक कर घुटनों को छू जाती ॥
जब मटक-मटक कर चले, हंसी थी भारी।
हो गये देखकर लोट-पोट नर नारी ॥

- यहाँ विचित्र स्वरूप वाले किसी पात्र का वर्णन है। यह पात्र आलम्बन है।
- दर्शक आश्रय है।
- मटक-मटक चलना उद्दीपन है।
- हँसना, लोटपोट होना अनुभाव है।
- हर्ष, औत्सुक्य आदि संचारी भाव है।
- इस प्रकार यहाँ हास्य रस की व्यंजना हुई है।

(3) करुण रस :-

- जहाँ शोक नामक स्थायीभाव, विभाव आदि से संयुक्त होकर रस-दशा को प्राप्त होता है, वहाँ करुण रस कहा जाता है।

उदाहरण :-

सोक विकल सब रोवहिं रानी। रूप, सील, बल, तेज बखानी।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमि तल बारहिं बारा ॥

- यहाँ महाराज दशरथ के मरण पर रानियों के शोक का वर्णन है।
- अतः यहाँ स्थायीभाव शोक (करुण रस) है।
- आलम्बन :- मृत दशरथ
- आश्रय :- रानियाँ
- संचारी भाव :- स्मृति, चिन्ता, प्रलाप, विषाद आदि।
- इन सभी काव्य-पंक्तियों में से करुण रस की व्यंजना हुई है।

By Chalia Sir

(4) रौद्र रस :-

जब 'क्रोध' नामक स्थायी भाव, विभावादि से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है, तो रौद्र रस माना जाता है।

उदाहरण :- माखे लखन, कुटिल भई भौंहे। रद-पुट फरकत नयन रिसौहे,

- यहाँ लक्ष्मण के क्रुद्ध होने का वर्णन है।
- स्थायी भाव क्रोध है।
- आलम्बन - जनक के वाक्य। आश्रय - लक्ष्मण
- उद्दीपन - सभा में उपस्थित राजा, धनुष का दर्शन आदि।
- कायिक अनुभाव - भौंहों का कुटिल होना, होठों का फड़कना, नेत्रों का क्रोधपूर्ण होना।
- संचारी भाव :- आवेश, चपलता, उग्रता आदि।
- अतः यहाँ रौद्र रस की व्यंजना हुई है।

By Chalia Sir

(5) वीर रस :-

- जब 'उत्साह' नामक स्थायी भाव, विभाव आदि के संयोग से रस-दशा को प्राप्त होता है तो वह वीर रस कहा जाता है।

उदाहरण :- जब दहक उठा सीमान्त, पुकारा माँ ने शीश चढ़ाने को।
नौजवाँ लहू तब तड़प उठा, हँसते-हँसते बलि जाने को॥
गरजे थे लाखों कंठ, आज दुश्मन को मजा चखाएँगे।
भारत-धरणी के पानी का, जौहर जग को दिखलाएँगे॥

- यहाँ भारत की सीमा पर आक्रमण होने पर भारतीय युवकों की वीर-भावना का वर्णन है।
- आलम्बन - शत्रु
- उद्दीपन :- माँ की पुकार, शत्रुओं का आक्रमण आदि।

YouTube - chalia Smart Study

- आश्रय :- भारतीय युवक , - अनुभाव :- गरजना, शत्रुओं को चुनौती देना,
- संचारी भाव - उग्रता, चपलता, धृति आदि।
- इस प्रकार यहाँ वीर रस की ~~व्यजना~~ व्यंजना हुई है।

(6) भयानक रस :-

जब 'भय' नामक स्थायी भाव, अनुभाव आदि के संयोग से रस-दशा को पहुँचता है तो वहाँ भयानक रस होता है।

उदाहरण :- हाट, बाट, कोट, ओट, अटनि, अगार, पौरि, खोरि-खोरि दौरि दौरि
दीनि अति आगि है।
मारत पुकारत, सम्हारत न कोऊ काहू, व्याकुल जहाँ सो तहाँ
लोग चले भागि है।

- यहाँ हनुमान द्वारा लंका जलाये जाने से भयभीत हो रहे राक्षसों का वर्णन है।
- आलम्बन - हनुमान और जलती हुई लंका है।
- आश्रय - राक्षस-राक्षसियाँ
- उद्दीपन - हनुमान का विकराल रूप, अग्नि की बढ़ती हुई ज्वालाएँ, उनका दौड़-दौड़कर आग लगाना आदि।
- संचारी भाव - त्रास, चिन्ता, शंका, प्रलाप आदि।

(7) वीभत्स रस :- *जुगुप्सा (घृणा)

जहाँ 'जुगुप्सा' नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव से पुष्ट होता ~~है~~ हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है, वहाँ वीभत्स रस होता है।

उदाहरण :- घर में लाशें, बाहर लाशें, जनपथ पर सड़ती हैं लाशें।
आँखें नृशंस यह दृश्य देख मुँद जाती, घुटती हैं श्वासें॥

- यहाँ बांग्लादेश में पाकिस्तानी अत्याचार का वर्णन है।

By Chalia Sir

- स्थायी भाव :- जुगुप्सा (घृणा) है।
- आलम्बन :- सड़ती हुई लाशें।
- आश्रय :- जन समुदाय या दर्शक
- उद्दीपन :- घृणात्मक दृश्य
- अनुभाव - आँखे मूंदना, श्वास घुटना आदि।
- संचारी भाव :- ग्लानि, दैन्य, निर्वेद आदि।

(8) अद्भुत रस :- (विस्मय/आश्चर्य)

उदाहरण- गिरधर गिरी अंगुरी धरयो विस्मित जन समुदाय
बरसे मूसलाधार पर बूंद न मही पर आए।

- स्थायी भाव :- विस्मय (आश्चर्य)
- विभाव (i) आलम्बन - खुद श्री कृष्ण।
(ii) उद्दीपन - श्री कृष्ण का गोवर्धन पर्वत उठाना।
(iii) आश्रय - ब्रज के लोग।
- अनुभाव - (i) कायिक - ताली बजाना, वाह-वाह करना।
(ii) ~~सात्विक~~ सात्विक - रोमांच, कंप
- संचारी भाव/व्यभिचारी भाव - हर्ष, गर्व, औत्सुक्य।

(9.) शान्त रस :- निर्वेद (वैराग्य)

उदाहरण :- शापित सा मैं जीवन का यह ले कंकाल भटकता हूँ।
उसी खोखलेपन में यह बोलता भटकता हूँ।
अंत तमस है किन्तु प्रकृति का आकर्षण है खींच रहा,
किंतु सब पर हां अपने पर भी मैं झुंझलाता हूँ खीझ रहा।

By Chalia Sir

· स्थायी भाव - निर्वेद (वैराग्य)

· विभाव - (i) आलम्बन – संसार

(ii) उद्दीपन - निराशा जनक परिस्थितियाँ

(iii) आश्रय – मनु

· अनुभाव - (i) कायिक - भटकना, चिंतावश माथे पर बल पड़ना।

(ii) सात्विक - रोमांच, अश्रु, स्तम्भ।

· संचारी भाव – आलस्य, चिंता, ग्लानि, दीनता।

(10.) वत्सल रस :- (वात्सल्य रस)

उदाहरण - जसोदा हरि पालने झुलावैं,
हलरावै दुलराइ मल्हावैं जोइ सोइ कछु गावै।
कबहुं पलक हरि मूँद लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि करि करि सैन बतावैं।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ, सो नंद भामिनि पावैं॥

· स्थायी भाव - वत्सलता

· विभाव - (i) आलम्बन – शिशु कृष्ण

(ii) उद्दीपन – कृष्ण की चेष्टाएँ,

(iii) आश्रय - यशोदा

· अनुभाव – हिलाना, दुलार करना, गाना, संकेत करना।

· संचारी भाव - हर्ष आदि।

By Chalia Sir

youtube- Chalia Smart Study

* महत्वपूर्ण प्रश्न *

प्रश्न 1. भाखे लखन, कुटिल भई भौंहें।
रद पुट फरकत नयन रिसौंहे। काव्य पंक्ति में रस है –

✓(अ) रौद्र (ब) करुण (स) वीभत्स (द) वीर

प्रश्न: 2. उत्साह रस का स्थायी भाव है –

(अ) शृंगार ✓(ब) वीर (स) करुण (द) रौद्र

प्रश्न: 3. वीभत्स रस का स्थायी भाव है।

(अ) भय (ब) रति ✓(स) जुगुप्सा (द) शोक

प्रश्न: 4. वत्सल रस का स्थायी भाव है?

(अ) रति (ब) भय (स) शोक ✓(द) वात्सल्य

प्रश्न: 5. करुण रस का स्थायी भाव है?

(अ) जुगुप्सा ✓(ब) शोक (स) वीभत्सा (द) वात्सल्य

प्रश्न: 6. शृंगार रस का स्थायी भाव है –

✓(अ) रति (ब) वात्सल्य (स) भय (द) शोक

प्रश्न: 7. भयानक रस का स्थायी भाव है –

(अ) शोक (ब) जुगुप्सा (स) रति ✓(द) भय

प्रश्न: 8. आश्रय की चेष्टाओं को कहा जाता है।

(अ) भाव (ब) संचारी भाव ✓(स) अनुभाव (द) विभाव

प्रश्न: 9. रोना, छाती पीटना, पछाड़ खाकर गिरना आदि अनुभावों से कौन-सा रस व्यंजित होता है।

✓(अ) करुण रस (ब) वीर रस (स) वीभत्स रस (द) अद्भुत रस

प्रश्न: 10. किसी की चेष्टा, वाणी, अंग-विकार या चेष्टाओं को देखकर प्रफुल्लित होने पर किस रस की व्यंजना होती है।

(अ) अद्भुत रस (ब) वत्सल रस ✓(स) हास्य रस (द) करुण रस

By Chalia Sir

प्रश्न:11. काव्य के पढ़ने, सुनने अथवा देखने से जो आनंद प्राप्त होता है, वही..... कहा जाता है। (रस)

प्रश्न:12. स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और..... रस के चार अंग है। (संचारी भाव)

प्रश्न:13. स्थायी भावों की संख्या..... है। (नौ)

प्रश्न:14. स्थायी भावों को जगाने वाले व्यक्ति, वस्तु या परिस्थियाँ..... कहे जाते है। (विभाव)

प्रश्न:15. मानस की चेष्टाएं..... कही जाती है। (अनुभाव)

प्रश्न:16. संचारी भावों की संख्या..... मानी गई है। (तैंतीस)

By Chalia Sir

youtube - chalia Smart Study

काव्य - गुण

परिभाषा: - (आचार्य वामन के अनुसार)

" काव्य में शोभा उत्पन्न करने वाले शब्द ही काव्य गुण है "

- जिस प्रकार मनुष्य में सुशीलता, उदासीनता, वीरता आदि गुण होते है, वैसे ही गुण काव्य में होते है।
- जिस प्रकार गुणों से ही मनुष्य का महत्व है, उसी प्रकार काव्य भी गुण से ही हृदय स्पर्शी बनता हैं।
- ~~मुख~~ काव्य गुण तीन प्रकार के होते हैं।
  (1) प्रसाद गुण
  (2) ओज गुण
  (3) माधुर्य गुण

(1) प्रसाद गुण: -

- प्रसाद का शाब्दिक अर्थ - 'प्रसन्नता'

परिभाषा: - जिसके चित्त में उक्ति होते ही अर्थ स्पष्ट हो जाए, उसे ही प्रसाद गुण कहते है।

- प्रसाद का अर्थ है - स्वच्छता या निर्मलता।
- जहाँ सरल सीधे-साधे सुबोध शब्दों के द्वारा वाक्य की रचना की जाती है, वहां प्रसाद गुण होता है।
- इसमें शृंगार व करूण रस उपयुक्त माना जाता हैं।
- सरोवर का जल निर्मल हो तो तले तक सब कुछ दिखाई पड़ता है, उसी प्रकार काव्य में प्रसाद गुण होने से वाक्य का समस्त अर्थ तुरन्त मन में स्पष्ट हो जाता हैं।
- जिस प्रकार सूखे काठ में प्रज्वलित अग्नि सहज ही और शीघ्र ही व्याप्त

By Chalia Sir

हो जाती है. वैसे ही प्रसाद गुण वाली रचना को पढ़ते ही उसका अर्थ चित्त में व्याप्त हो जाता है।

उदाहरण :- देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करके करुणा निधि रोए,
पानी परात हाथ छूयो नहीं नैनन ही जल से पग धोए॥

'हे प्रभो आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे भवगुणों को दूर हमसे कीजिए॥'

(2) ओज गुण :-

- ओज शब्द का अर्थ - तेज, प्रकाश व दीप्ति।
- जो रचना सुनने वाले के मन में उत्साह, वीरता, आवेश आदि जागृत करे। वहाँ ओज गुण होता है।
- विशेषताएँ :-
  - हृदय को वीरतापूर्ण भावों से भर देने वाले द्वित्व वर्ण, संयुक्त वर्ण, मूर्धन्य वर्ण से युक्त रचना ओज गुण वाली होती है।
- इसका प्रयोग वीर रस, रौद्र रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस में किया जाता है
- युद्ध वर्णन, वीरों का स्वभाव, वीरता, वेशभूषा, प्रकृति की विराट एवं भयंकर दृश्यों को प्रकट करने के लिए ओज गुण का प्रयोग किया जाता है।
- ओज काव्य का वह गुण है जिससे मन में उत्साह, उत्तेजना उत्पन्न होती है।

उदाहरण :- हयरुण्ड गिरे, गजशुण्ड गिरे, गिरकर अवनि पर शुंड गिर।
भू पर हय विकल वितुण्ड गिरे, लड़ते-२ अरि झुंड गिरे॥

By Chalia Sir

(3) माधुर्य गुण :-

परिभाषा- अंतःकरण को आनंद, उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल, मधुर वर्णों से युक्त रचना माधुर्य गुण सम्पन्न होती है।

- जिस रचना से अंतःकरण आनंद से द्रवीभूत हो जाता है, उसमें माधुर्य गुण होता है।
- आचार्य कुंतक के अनुसार समास रहित मनोहारी पद-विन्यास को माधुर्य गुण माना जाता है।

विशेषताएँ :-

- इसमें मूर्धन्य, संयुक्त, द्वित्व एवं सामासिक पदों का अभाव पाया जाता है।
- माधुर्य गुण शृंगार, करुण व शांत रस के लिए उपयोगी है।

उदाहरण :- "मधुमय वसंत जीवन वन के, बन अंतरिक्ष की लहरों में।
कब आए थे तुम चुपके से, रजनी के पिछले पहरों में ॥"

"बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करे, भौंहनि हंसे, दैन कहे नट जाय ॥"

By Chalia Sir

* महत्वपूर्ण प्रश्न *

1. प्रसाद गुण की परिभाषा लिखिए। (2021)

उत्तर - जिस रचना में सीधे, सरल, अर्थबोधक शब्द प्रयुक्त होते हैं।

2. प्रसाद गुण की विशेषता होती है।

उत्तर - अर्थ की सुबोधता एवं सुस्पष्टता।

3. 'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो' - इस पंक्ति में गुण है?

उत्तर - ओज गुण।

4. 'यह ~~संसार~~ ऐसा संसार, जैसा सेंवल फूल।
दिन दस के त्यौहार को, झूठे रंग न भूल॥"
इस पंक्तियों में कौन-सा गुण है।

उत्तर - प्रसाद गुण।

5. आचार्य वामन ने कितने गुण माने हैं।

उत्तर - दस गुण माने है।

6. काव्य गुण कितने प्रकार के होते हैं? नाम लिखिए। (2018)

उत्तर - काव्य गुण तीन प्रकार के होते है - (1) माधुर्य (2) ओज (3) प्रसाद।

7. माधुर्य गुण की परिभाषा लिखिए। (2020)

उत्तर - पाठक का चित्त आनन्द से द्रवीभूत हो जाए, उसे माधुर्य गुण कहते हैं।

8. माधुर्य गुण किन-किन रसों में रहता हैं।

उत्तर - माधुर्य गुण श्रृंगार, शान्त एवं करुण रस में।

9. माधुर्य गुण में कौनसे वर्ण वर्जित हैं।

उत्तर - ट वर्ग, रेफ, महाप्राण एवं ऊष्म वर्ण वर्जित हैं।

10. ओज गुण की परिभाषा लिखिए। (2019)

उत्तर - जिस रचना को पढ़कर चित्त में जोश, उत्साह जागृत हो, उसे ओज गुण कहते हैं।

11. ओज गुण में किन वर्णों का प्रयोग होता हैं।

उत्तर - इस में द्वित्व वर्णों, एवं संयुक्ताक्षरों का प्रयोग होता हैं।

By Chalia Sir

12. ओज गुण में कैसे पद रखे जाते हैं।

उत्तर- ओज गुण में लम्बे-लम्बे समस्त पद रखे जाते हैं।

13. ओज गुण में किन ध्वनियों की अधिकता रहती है।

उत्तर- ऊष्म एवं मूर्धन्य ध्वनियों की अधिकता रहती है।

14. 'धिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि लोल सागर खरभरे।' इस पंक्ति में कौनसा गुण है:-

उत्तर- भयानक दृश्य का वर्णन होने से ओज गुण है।

15. 'मन्द-मन्द निकस्यो मुकुन्द मधुवन तें।' इस पंक्ति में कौन-सा गुण है।

उत्तर -इसमें अनुनासिक वर्णों का प्रयोग होने से माधुर्य गुण है।

16. 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् - काव्य की यह परिभाषा दी है। (2011)

उत्तर- पण्डितराज जगन्नाथ।

17. 'हिमाद्रि-तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती। स्वयं-प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती॥'

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में काव्य गुण है। (2021)

उत्तर-

18. ..... काव्य का वह गुण है जो चित्त को द्रवित कर उसे आह्लादित कर देता है। (2021)

उत्तर-

19. वाक्य का अर्थ पढ़ने के साथ सहज समझ आ जाए वहाँ..... गुण होता है। (2022)

उत्तर -

20. ..... का उत्कर्ष करने वाली बातें को गुण कहते हैं। (2023)

उत्तर -

By Chalia Sir

youtube - chalia Smart study

* काव्य - दोष *

परिभाषा :- किसी व्यक्ति या वस्तु में किसी चीज का अभाव या बुराई होना ही दोष है, उसी प्रकार काव्य के आनंद में बाधा उत्पन्न करने वाली बातों को ही काव्य दोष कहते हैं।

अन्य परिभाषाएँ :- आचार्य वामन के अनुसार :-
"काव्य में गुणों के विरोधी तत्वों को दोष कहा जाता है।"

→ आचार्य विश्वनाथ के अनुसार (साहित्य दर्पण से) - काव्य के आनंद से दूर ले जाने वाले तत्व दोष कहलाते हैं।

- जिस प्रकार सुन्दर दृश्य में कोई बाधा स्वरूप झगड़ा या अन्य कारण से उस दृश्य का आनंद नष्ट हो जाता है। वैसे ही काव्य का कोई दोष काव्य को समस्त आनंद को नष्ट कर देता है।

⇒ काव्य दोष तीन प्रकार के होते है -

(1) शब्द दोष / पद दोष
(2) वाक्य दोष (क्रम भंग दोष)
(3) अर्थ दोष

(1) शब्द दोष या पद दोष :-
व्याकरण के नियमों के विरुद्ध यदि किसी शब्द या पद का प्रयोग किया गया है तो वहां शब्द या पद दोष होता है।

उदाहरण :- कुमुदिनी खिल गया, बाल रवि को देखि।

- इसमें कुमुदिनी स्त्रीलिंग है, अतः गया नहीं की जगह गई शब्द आएगा और सूर्य को देखकर कुमुदिनी का खिलना दर्शाया गया है। लेकिन वास्तव में कुमुदिनी चन्द्रमा को देखकर खिलती है। अतः शब्द / पद दोष निहित है।

By Chaia Sir

(२) वाक्य दोष:-

किसी वाक्य की रचना में पाया जाने वाला दोष वाक्य दोष कहलाता है।

उदाहरण:- ~~सु~~ अमानुषी भूमि मबानरी करों।

-रावण कहता है कि मैं इस भूमि को मनुष्यों और बन्दरों से रहित कर दूंगा। परन्तु वाक्य पढ़ने से ~~अर्थ~~ यह अर्थ प्रकट होता है कि मैं मनुष्य से रहित भूमि बन्दरों से रहित कर दूंगा। अतः यहाँ सही वाक्य रचना नहीं होने से वाक्य दोष है।

(3) अर्थ दोष:-

किसी वाक्य में अर्थ के संबंध में कोई दोष आ जाता है तो वहाँ अर्थ दोष माना जाता है।

उदाहरण:- चितहि ले दसकंध उड्यौ,
बांध्यों विचारों वारिधि, नीरधि, अंबुधि, पयोधि, रत्नाकर, सिंधु, वारिस,

-यहां प्रस्तुत उदाहरण में समुद्र के बहुत से पर्यायवाची दिए गए है। यदि इनमें से एक ही शब्द दे दिया जाता है तो भी वाक्य का अर्थ स्पष्ट हो जाता। इसलिए यहां अर्थ दोष है।

अन्य उदाहरण:- दृश्य बड़ा था चारु, मंजु, सुन्दर, ~~मने~~ मनमोहन।

By Chalia Sir

⇒ प्रमुख दोषों के लक्षण व उदाहरण :-

(1) श्रुति कटुत्व दोष :-

जब किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द सुनने में कठोर लगते हैं, या अप्रिय लगते है तो श्रुति कटुत्व दोष होता है।

उदाहरण :- - मर्त्सना से भीत हो, वह बालक तब चुप हो गया।

- है उर्मिल जल निश्चलत्प्राण पर शतदल।

- शीतलच्छाया सांस्कृतिक सूर्य।

- इन तीनों उदाहरण में मर्त्सना, निश्चलत्प्राण, शीतलच्छाया शब्द सुनने में कठिन लगे रहें है इसलिए श्रुति कटुत्व दोष है।

अन्य उदाहरण - "कार्त्यार्थी तब होहुंगी, मिलिहैं जब पिय माय।"

इसमें कार्त्यार्थी शब्द सुनने में कठोर होने से श्रुति कटुत्व दोष है।

(2) ग्राम्यत्व दोष :- जब किसी वाक्य में ग्रामीण भाषाओं के शब्द प्रयोग होता है, वहाँ ग्राम्यत्व दोष होता है।

उदाहरण :- - मुंड पे मुकुट धरे सोहत है गोपाल।

- मचक-मचक मत चलो।

- मसल दिये नायक ने गोरे-गोरे गाल।

- हेरत-हेरत हारि परयौं रसखान बतायो न लोग लुगाइन।

इन सभी उदाहरणों में मुंड, मचक-मचक, गाल और लुगाइन शब्द गंवारु होने से ग्राम्यत्व दोष है।

By Chalia Sir

(3) अप्रतीतत्व दोष :-

- लोग व्यवहार में न प्रयुक्त होने वाले शास्त्रीय शब्दों का काव्य में प्रयोग होने पर अप्रतीतत्व दोष होता है।

अर्थात् जहां ऐसे शब्द का प्रयोग हो, जो किसी शास्त्र-विशेष में ही व्यवहार में आता है और पारिभाषिक होने से स्वतंत्र प्रयोग नहीं किया जाता उसे अप्रतीतत्व दोष कहते है।

- विषमय यह गोदावरी अमृतन को फल देत (विष = जल)
- तत्व ज्ञान पाकर हुए हिल तल बसी दुख आशय दलित समस्त। (आशय-वासना)
- हिल तब बसी दुख देत ये तेरे अनुभाव। (अनुभाव = चेष्टाएँ)

(4) क्लिष्टत्व दोष -

जब अर्थ समझ में ही न आये या अर्थ समझने में बहुत कष्ट का अनुभव हो तो वहाँ क्लिष्टत्व दोष होता है।

उदाहरण :- - हेमसुता पति वाहनप्रिय, तुम उसमें रति न फेर।
बैल

- लंकापुर पति को जो भ्राता, तासु प्रिया न भावती।
नींद

- सांरग ले सांरग चल्यो, सांरग उग्यो आय।
सांरग-सांरग में दियो, सांरग-सांरग माय॥

- सांरग के अर्थ - घड़ा, स्त्री (सुन्दरी), बादल (वर्षा),
वस्त्र, घड़ा, स्त्री, तालाब।

(5) अक्रमत्व दोष - (एक शब्द का क्रम भंग)

यदि किसी वाक्य में कोई एक शब्द निश्चित क्रम पर नहीं लिखा जाता है, तो वहां अक्रमत्व दोष होता है।

By Chalia Sir

उदा० - . अमानुषी भूमि अबानरी करौ।

- यहाँ अमानुषी से पहले भूमि शब्द आयेगा।

. विश्व में लीला निरंतर कर रहे है मानवी।

- यहाँ मानवी शब्द लीला से पहले प्रयुक्त होना चाहिए कि वे प्रभु विश्व में निरंतर 'मानवी लीला' कर रहे हैं।

. समय सबल निरबल करत कहत मनहुँ यह बात।

इस पंक्ति में यह शब्द समय सबल निरबल करत के बाद होना चाहिए था, परन्तु ऐसा क्रम न रखने से यहाँ अक्रमत्व दोष आ गया है।

(6) दुष्क्रमत्व दोष :- (पूरा वाक्य निष्क्रमण)

जब वाक्य में किसी बात को क्रम में नहीं रखा जाता है, अर्थात लोक संस्कृति के विरुद्ध कर्म होता है, तो वहाँ दुष्क्रमत्व दोष होता है।

उदाहरण :- "नृप मोको हय दीजिए, अथवा मत्त गजेन्द्र।"

- इस कथन में घोड़े से पहले हाथी मांगने का क्रम होना चाहिए था। अतः इसमें क्रम-विरोध होने से दुष्क्रमत्व दोष है।

". मारुत नंदन मारुत को, मन को खगराज को वेग लजायो।"

- यहां मन को अंत में रखना चाहिए था, क्योंकि मन का वेग खगराज के वेग से अधिक होता है।

(7) च्युतसंस्कृति दोष :-

व्याकरण के नियमों के विरुद्ध पदों या शब्दों का प्रयोग करने से च्युतसंस्कृति दोष होता है, अर्थात व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध शब्दों का प्रयोग करने पर यह होता है।

. फूलों की लावण्यता देती है आनंद।

इस पंक्ति में 'लावण्यता' शब्द व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है।

By Challa Sir

• अरे अमरता के चमकीले पुतलों, तेरे वे जयनाद।"

- यहाँ पर 'तेरे' के स्थान पर 'तुम्हारे' होना चाहिए।

• क्षण-भर रहा उजाला में।

- यहाँ 'उजाला' के स्थान पर 'उजाले' होना चाहिए, व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है।

(8) अश्लीलता दोष :-

जब काव्य में घृणाजनक, लज्जास्पद एवं अमंगलसूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ अश्लीलता दोष होता है।

उदाहरण :- • लगे थूक कर चाटने अभी-2 श्रीमान

- इसमें थूककर चाटना घृणाजनक है।

• अभिप्रेत पद प्रियतम ने पाया।

- इसमें 'प्रेत' पद मर जाने का अर्थ देने से अमंगलसूचक है।

(9) पुनरुक्त दोष :-

जब अर्थ की पुनरुक्ति हो, ~~जब~~ जब वही बात दूसरे शब्दों के द्वारा पुनः कही जावे, तब पुनरुक्ति दोष होता है।

उदाहरण - दृश्य बड़ा था रम्य, मंजु, सुन्दर, मनोहर।

- इसमें 'रम्य' शब्द का प्रयोग करने के बाद उसी अर्थ के लिए, मंजु, सुन्दर व मनोहर शब्दों का प्रयोग करने से दोष आ गया।

• सब कोऊ जानत तुम्हें सारे जगत जहान।

- यहाँ 'जगत' के बाद 'जहान' का प्रयोग अनावश्यक रूप से करने पर पुनरुक्त दोष है।

By Chalia Sir

youtube- Chalia Smart Study

(10) न्यूनपदत्व दोष :-

जहाँ वाक्य रचना में किसी शब्द की कमी रह जाती है, इससे अर्थ पूरा नहीं निकलता है, वहाँ न्यूनपदत्व दोष होता है।

उदाहरण :- तो भी सच है धर्मराज ज्वाला नयी नहीं थी,
दुर्योधन के मन में वह वर्षों से खेल रही थी।

- इसमें नीचे की पंक्ति में 'ज्वाला' शब्द की कमी रह जाने से न्यूनपदत्व दोष है।

(11) अधिकपदत्व दोष :-

जब वाक्य में आवश्यकता से अधिक शब्द या पदों का निरर्थक प्रयोग होता है, तब अधिकपदत्व दोष होता है।

उदाहरण :- "लिपटी पुष्प पराग में सनि स्वेद मकरंद"

- इसमें पुष्प शब्द का प्रयोग अधिक है, क्योंकि पराग शब्द से भी वाक्य की पूर्ति हो जाती है।

(12) हतवृत्त दोष :-

जब छंद के नियमों के अनुसार वर्ण-मात्रा का पालन नहीं किया जाता है, या यदि भंग हो जाता है, तब हतवृत्त या छन्दोभंग दोष होता है।

उदाहरण - राम-लखन चले वनवास।

इसमें 15 मात्राएँ हैं, जबकि चौपाई छंद में 16 मात्राएँ होती हैं।
अतः इसमें छंदोगत दोष है।

By Chalia Sir

* महत्वपूर्ण प्रश्न *

प्र०1. काव्य-दोष कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर - तीन प्रकार। (1) शब्दगत दोष (2) अर्थगत दोष (3) रसगत दोष

प्र०2. 'नृप मोको हय दीजिए अथवा मत्त गजेन्द्र।" इसमें कौन-सा दोष है?

उत्तर - दुष्क्रमत्व दोष।

प्र०3. श्रुतिकटुत्व दोष कब होता है।

उत्तर - काव्य रचना सुनने में कटु लगने वाले वर्णों का प्रयोग होने से श्रुति कटुत्व दोष होता है।

प्र०4. च्युतसंस्कृति दोष का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - फूलों की लावण्यता देती है आनंद। यहाँ 'लावण्यता' शब्द में दोष है।

प्र०5. 'मुख्यार्थहतिः दोषः' का आशय क्या है।

उत्तर:- काव्य में मुख्यार्थ की हानि या विनाश होना ही दोष होता है।

प्र०6. काव्य में रस-दोष कब होता है?

उत्तर - काव्य में भाव, विभाव आदि का उचित विन्यास न होने से रस-दोष होता है।

प्र०7. 'अक्रमत्व' एवं 'दुष्क्रमत्व' में अन्तर लिखिए।

उत्तर - वाक्य में किसी शब्द का क्रम अनुचित रखा गया हो वहाँ पर अक्रमत्व दोष होता है तथा जहाँ लोक और शास्त्र-विहित क्रम का उल्लंघन हो वहाँ दुष्क्रमत्व दोष होता है।

प्र०8. दुष्क्रमत्व दोष कब होता है।

उत्तर - लोक एवं शास्त्र में विहित क्रम का उल्लंघन होने पर दुष्क्रमत्व दोष होता है।

प्र०9. "विश्व में लीला निरन्तर कर रहे मानवी।" में कौनसा दोष है।

उत्तर - अक्रमत्व दोष।

By Chala Sir

10. क्लिष्टत्व दोष की परिभाषा लिखिए। (2018)

उत्तर- जहाँ पर किसी शब्द का अर्थ कठिनाई से समझ में आता है, वहाँ क्लिष्टत्व दोष पाया जाता है।

11. काव्य दोष किसे कहते हैं। (2019)

उत्तर- जब मुख्यार्थ के बोध में बाधा आए, तब काव्य सौन्दर्य का अपकर्ष करने वाले तत्व को काव्यदोष कहते है।

12. 'अक्रमत्व और दुष्क्रमत्व' में अन्तर लिखिए। (2020)

उत्तर- वाक्य में किसी शब्द का क्रम अनुचित रखा गया हो, वहाँ अक्रमत्व दोष होता है. तथा जहाँ लोक और शास्त्र-विहित क्रम का उल्लंघन हो वहा दुष्क्रमत्व दोष होता है।

13. काव्य के रसास्वादन में बाधा पँहुचने वाले तत्व ...... कहलाते हैं। (2022)

उत्तर- काव्य दोष कहलाते हैं।

14. "कल की इकटक डटि रही टटिया अँगुरिन टारि" पंक्ति में ...... काव्य दोष है (2023)

उत्तर -

15. अश्लीलता दोष की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- काव्य में घृणा, लज्जा एवं अमंगलजनक शब्दों का प्रयोग हो।

16. 'हेम सुता पति वाहन प्रिय, इसमें रती न फेर।' कौन-सा दोष है?

उत्तर- अर्थबोध सहज न होने के कारण क्लिष्टत्व दोष है।

17. " कोमल वचन सभी को भाते, अच्छे लगते मधुर वचन।" इस पंक्ति में कौन-सा दोष है।

उत्तर- वचन शब्द का उसी अर्थ में दो बार प्रयोग होने से पुनरुक्त दोष है।

18. 'राजन तुम्हारे खड़ग से यश पुष्प था विकसित हुआ।' इस पंक्ति में कौन-सा दोष है।

उत्तर- इसमें एक शब्द लता का प्रयोग न होने पर न्यूनपदत्व दोष है।

19. ' लगे थूककर चाटने भगी-भगी श्रीमान' । इसमें कौनसा दोष है।

उत्तर- अश्लीलत्व दोष।

youtube- chalia Smart Study

By Chalia Sir

(२०) हतवृत दोष का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - छन्द के नियमों के अनुसार वर्ण- मात्रा - यति आदि का पालन न करने से हतवृत्त दोष होता है।

उदाहरण - "प्यारे के पाँव मुख मुरलीनाद जैसा उन्हें था।"

(२१) न्यूनपत्व दोष का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - "लिपटी पुष्प पराग में सनी स्वेद मकरन्द।"

(२१) "सब कोऊ जानत तुम्हें सारे जगत जहान।" इस पंक्ति में कौन सा दोष है।

उत्तर - 'जगत' के बाद जहान का प्रयोग करने से पुनरुक्त दोष है।

(२२) काव्य में शब्दगत दोष कब होता है।

उत्तर - काव्य में अशुद्ध, कर्णकटु, अनुचित एवं निरर्थक शब्दों का प्रयोग न होने से शब्दगत दोष होता है।

(२३) च्युतसंस्कृति दोष की परिभाषा लिखिए।

उत्तर - व्याकरण के नियमों के विरुद्ध शब्दों या पदों का प्रयोग करने पर च्युतसंस्कृति दोष होता है।

(२४) 'दीप अनूप छयपुत पै रघुलाल के गाल गुलाल को रंग है।"
इस पंक्ति में कौन - सा दोष है।

उत्तर - इसमें 'गाल' शब्द गँवारु होने से ग्राम्यत्व दोष है।

By Chalia Sir